दिनांक 28-30 अगस्त, 2024 के दौरान पुरुलिया, पश्चिम बंगाल के मत्स्य पालकों के लिए मीठे पानी की जलकृषि के आधुनिक तरीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 28-30 अगस्त, 2024 के दौरान बांकुरा जिले के 30 अनुसूचित जाति के मछुआरों (पुरुष 28 और महिला 2) के लिए जिला परियोजना प्रबंधन इकाई (डीपीएमयू), पश्चिम बंगाल लघु सिंचाई परियोजना के त्वरित विकास, कृषि-सिंचाई परिसर, बेलगुमा, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल में 'मीठे पानी की जलकृषि के आधुनिक तरीकों' पर तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का उद्घाटन श्री जॉयदीप दास, कार्यकारी अभियंता, डीपीएमयू, डॉ. टी. के. घोषाल, प्रधान वैज्ञानिक और आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता केंद्र के प्रमुख की उपस्थिति में किया गया। प्रशिक्षण का समन्वय डॉ. सुमन मन्ना, वैज्ञानिक,कोलकाता केंद्र द्वारा किया गया। डीपीएमयू के अन्य कर्मचारी जैसे कृषि विशेषज्ञ श्री सुभेंदु विकास चंदा, डॉ. अभिजीत हलदर, मत्स्य विशेषज्ञ श्री गौरंग ओझा, श्री राज मंडल, श्रीमती संगीता मैती ने संसाधन व्यक्ति के रूप में प्रशिक्षण कार्यक्रम की सुविधा प्रदान की । श्री जॉयदीप दास ने उद्घाटन भाषण में सदन को बताया कि कृषि सिंचाई विभाग द्वारा कई गांव के तालाबों का निर्माण किया गया था और इन तालाबों में मछली पालन की क्षमता है क्योंकि इन तालाबों में पूरे साल पर्याप्त पानी मौजूद रहता है । रामसागर, बांकुड़ा के साथ निकटता होने के कारण, अच्छी गुणवत्ता वाले बीज प्राप्त करना यहां चिंता का विषय नहीं है, लेकिन वैज्ञानिक मछली पालन और अन्य संसाधनों की कमी के कारण, किसान खेत तालाबों से अधिकतम क्षमता का दोहन नहीं कर पा रहे हैं । डॉ. टी के घोषाल, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख,आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता केंद्र ने प्रतिभागियों को फ़ीड-आधारित जलीय कृषि की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी दी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके फार्म मेड फीड तैयार करने का प्रशिक्षण किसानों को दिया गया। डॉ सुमन मन्ना ने किसानों को तालाब प्रबंधन और विभिन्न जल और मिट्टी की गुणवत्ता मापदंडों के रखरखाव के बारे में जानकारी दी । सीआईएफई एक्वाकल्चर टेस्ट किट का उपयोग करके पीएच, डीओ, अमोनिया, कठोरता आदि जैसे जल गुणवत्ता मापदंडों का व्यावहारिक प्रदर्शन किसानों को दिखाया गया । मछली रोग प्रबंधन, मीठे पानी के झींगा पालन, तिलापिया पालन और एकीकृत मछली पालन जैसे अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को भी शामिल किया गया ताकि किसान अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकें और फार्म परिवार की पोषण सुरक्षा के साथ-साथ आजीविका में सुधार कर सकें । डीपीएमयू, पुरुलिया के अन्य कर्मचारियों, श्री गौरंग ओझा और श्री राज मंडल, मत्स्य विशेषज्ञ ने एकीकृत मछली पालन और आम मछली रोगों और उनकी रोकथाम के बारे में किसानों को संबोधित किया । श्री शुभेंदु विकास चंदा, संस्थान विकास विशेषज्ञ, डीपीएमयू, पुरुलिया ने समुदाय प्रबंधित तालाबों में मत्स्य पालन गतिविधियों पर विचार-विमर्श किया। समापन समारोह में डीपीएमयू के अधिशासी अभियंता श्री जॉयदीप दास ने किसानों को तालाब की तैयारी, खाद डालना,नियमित जल गुणवत्ता निगरानी,चूना डालना आदि से लेकर वैज्ञानिक मछली पालन अपनाने पर जोर दिया, ताकि वे तालाब से अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सकें और आजीविका सुरक्षा में सुधार कर सकें । फीडबैक सत्र में किसानों ने प्रशिक्षण से प्राप्त परिणामों पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की और वैज्ञानिक मछली पालन अपनाने के लिए प्रेरित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में किसानों के बीच प्रशिक्षण प्रमाण पत्र, मैनुअल, सीआईएफई पीएच और डीओ किट वितरित किए गए। कार्यक्रम अत्यधिक सफल रहा और प्रतिभागियों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली ।

Fig. 1. Group photo with the participants

Fig. 2. Participants attending technical sessions

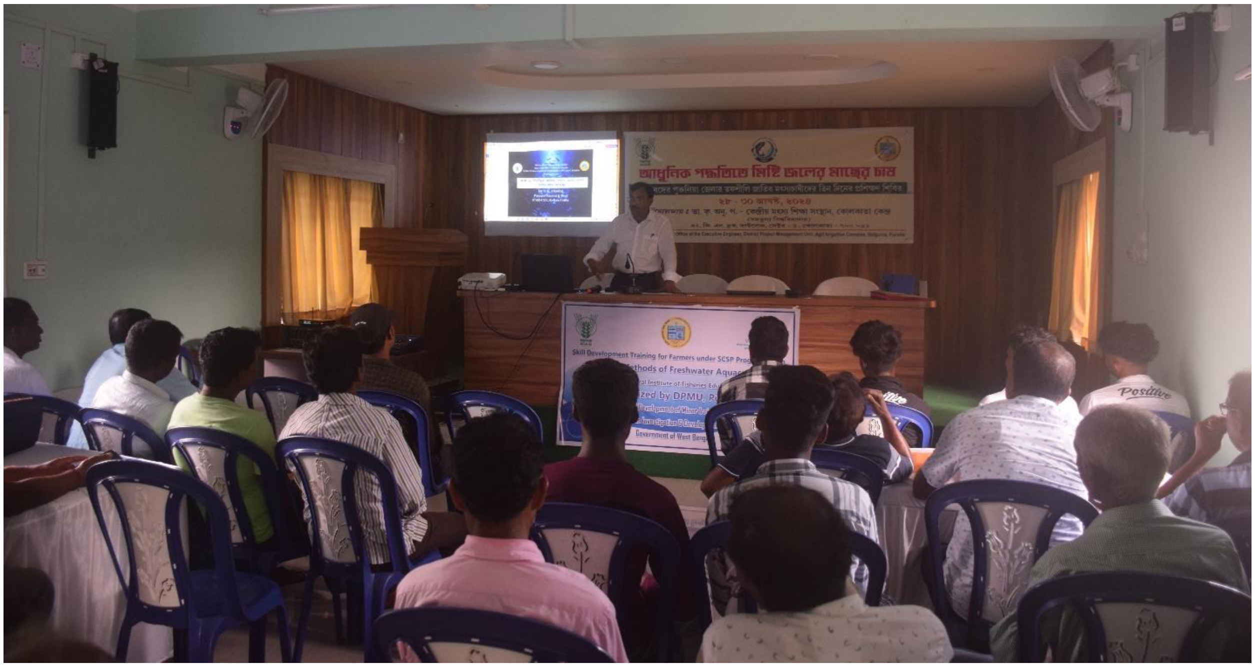
আধুনিক পদ্ধতিতে মিষ্টি জলের মাছের চাষ
২৮ - ৩০ আগস্ট, ২০২৪
Skill Development Training for Farmers under SCSP Prog
ethods of Freshwater Aqua
zed by DPMU, R
Government of West Beng

Fig. 3. Participants attending technical sessions in classroom

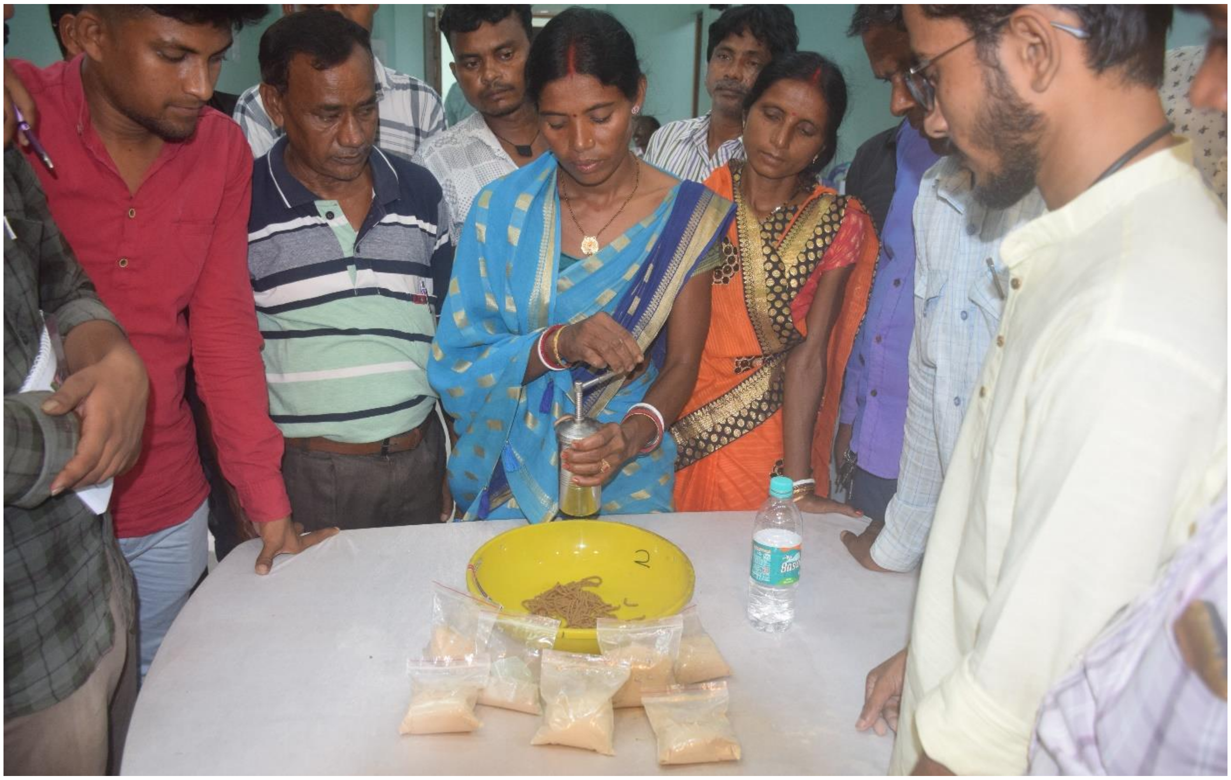

Fig. 4. Practical session on farm made feed preparation

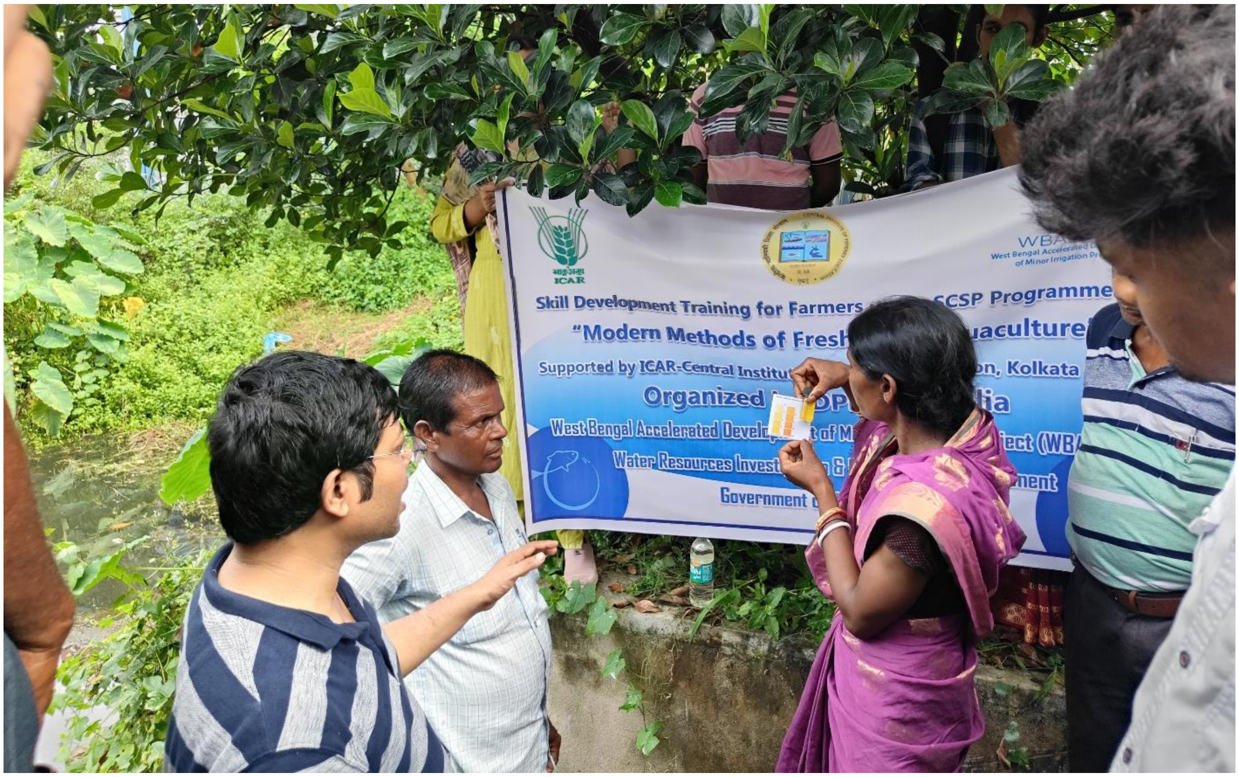
Skill Development Training for Farmers under SCSP Programme
"Modern Methods of Fresh aquaculture"
Supported by ICAR-Central Institut on, Kolkata
Organized
West Bengal Accelerated Develop t of M ject (WB
Water Resources Invest ment
Government

Fig. 5. Hands on practical on water quality analysis

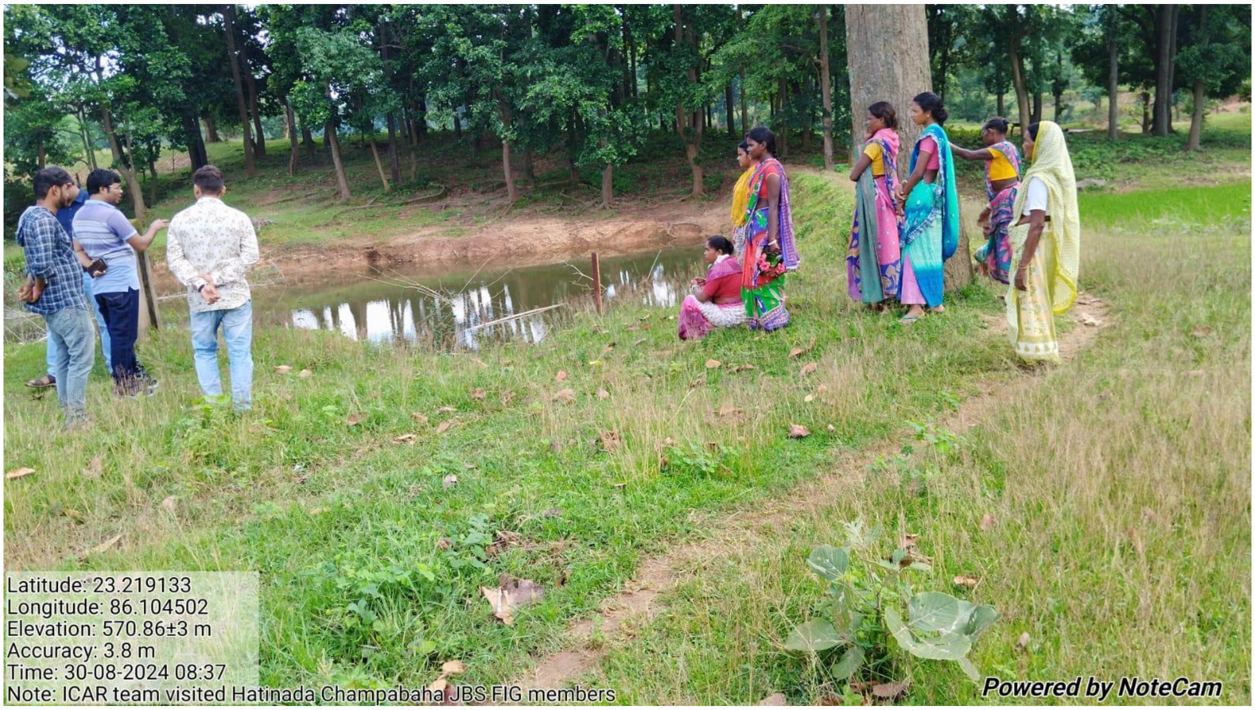
Latitude: 23.219133
Longitude: 86.104502
Elevation: 570.86±3 m
Accuracy: 3.8 m
Time: 30-08-2024 08:37
Note: ICAR team visited Hatinada Champabaha JBS FIG members
Powered by NoteCam

Fig. 6. Field visit to farmer's pond

Fig. 7. Distribution of CIFE pH and DO kit to farmers

Fig. 8. Distribution of training certificate to farmers

Fig. 9. Participants with their training completion certificates